शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

इलेक्ट्रानिक मीडिया के सामाजिक सरोकार

डॉ.वंदना तिवारी
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी विभाग)
गुरू घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय
बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध संक्षेप

व्यक्ति प्रारम्भ से ही अपने विचारों को सम्प्रेषित करता आया है। जिससे मानव समूहों के मध्य समाज, संस्कृति, राजनीति पर आधारित विभिन्न तरह के विचारों का जन्म हुआ। जैसेजैसे संसार में संचार के साधनों का विकास हुआ उसकी सम्प्रेषण गति और शैली भी बदलती चली गई। उसके लिए राज्य की सीमाएं छोटी पड़ने लगीं और वह अपनी प्रतिभा और कौशल से नवीनतम घटनाओं, व्यवहारों और कार्यकलापों को छापने लगा। छापेखाने के विकास से आगे बढ़ते हुए तकनीक पर आधारित टेलीविजन अस्तित्व में आया। जैसेजैसे संचार प्रणाली विकसित हुई वैसेवैसे संचार के क्षेत्रों में क्रांति हुई। संचार क्रांति का वर्तमान दौर इलेक्ट्रानिक मीडिया का है जो इंटरनेट के माध्यम से संसार की घटनाओं को पलभर में संप्रेषित करने की ताकत रखता है। जिसके कारण सम्पूर्ण दुनिया को एक'ग्लोबल विलेज' के रूप में अभिव्यक्त किया जाने लगा है। प्रस्तुत शोध पत्र में इलेक्ट्रोनिक मीडिया के सामाजिक सरोकार पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

सन् 1960 के बाद आई तकनीकी संचार क्रांति ने आदमी को बहुत गहराई से अपने साथ जोड़ा है। प्रत्येक क्षण बदल रहे संसार में हमारी मान्यताएँ और जीवन मूल्य भी बदल रहे हैं। इसने मानवीय सरोकारों एवं संवेदनाओं को भी बदल दिया है। इस संचार क्रांति से मानव जीवन पूरी तरह प्रभावित है। आज प्रत्येक व्यक्ति इन प्रसार माध्यमों का गुलाम बनकर रह गया है। प्रचार-प्रसार माध्यम मानव जीवन का एक अहम हिस्सा बन गया है। संचार क्रांति ने सम्पूर्ण विश्व को समेट कर छोटा कर दिया है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है, के तहत् सारा विश्व करवट ले रहा है। परिवर्तन रूपी ऊँट किस करवट बैठेगा ये तो समय बतायेगा, किन्तु आज जो परिदृश्य दिखाई दे रहा है, उसके अनुसार संचार क्रांति मनुष्य और उसके सामाजिक जीवन को नई परिभाषा प्रदान कर रही है।

संचार (communication) शब्द अंग्रेजी के Common शब्द से बना है जो कि लैटिन के communicare शब्द से व्युत्पन्न है। इसका शाब्दिक अर्थ है एक समान। संचार वह प्रक्रिया है जिसमें तथ्यों, सूचनाओं, विचारों, विकल्पों एवं निर्णयों का दो या दो से अधिक व्यक्तियों के मध्य आदान-प्रदान होता है संदेशों का आदान-प्रदान लिखित, मौखिक, अथवा सांकेतिक कुछ भी हो सकता है। इन संदेशों के आदान-प्रदान के माध्यम होते हैं, जो संचार माध्यम कहलाते हैं। ये माध्यम बातचीत, रेडियो, टेलीविजन, समाचार पत्र, विज्ञापन होर्डिंग, ई-मेल आदि कुछ भी हो सकता है। आज इन संसार माध्यमों के अभाव में आप पूरे विश्व से कटकर रह जायेंगे।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

इन संचार माध्यमों ने पूरे विश्व में संचार क्रांति ला दी है। संचार क्रांति ने मनुष्य को जागरूक बनाया और उसके लिए विकास का मार्ग भी प्रशस्त किया। ज्ञान, शिक्षा व चिन्तन के नये आयाम स्थापित किए हैं। हमारे ज्ञान और सोच का दायरा बढ़ाया है। इन संचार माध्यमों ने जागरूकता का ऐसा प्रकाश फैलाया जिसमें अंधविश्वासों, रूढ़ियों और परम्परावादी सोच का अंधकार छँटने लगा है। इनके माध्यम से उन सुदूर ग्रामीण अंचलों में जानकारी प्रेषित की जा रही है जो अभी तक मुख्य धारा से कटे हुए थे। आज शहर हो या गाँव सभी जगह संचार के कई साधन उपलब्ध हैं, टेलीविजन, रेडियो, मोबाईल, इंटरनेट, समाचार - पत्र, पत्रिकाएँ इत्यादि।

इलेक्ट्रानिक मीडिया

"इलेक्ट्रानिक मीडिया आंकड़ों पर आधारित ऐसी सूचना प्रणाली जिसे इलेक्ट्रानिक ऊर्जा या अन्य उपकरणों के माध्यम से निर्मित, संप्रेषित किया जाता है। सामान्य तौर पर दैनिक कार्यों में प्रयुक्त होने वाले रेडियो, टेलीविजन, कम्प्यूटर, सैलफोंस और अन्य विद्युत उपकरण, जो सूचनाओं का आदान-प्रदान करते हैं, इलेक्ट्रानिक मीडिया कहलाते हैं।" इलेक्ट्रानिक मीडिया में इंटरनेट की तकनीक से आपसी सहमति के आधार पर सूचनाओं का व्यापार किया जाता है। यह संचार का ऐसा साधन है जिससे संचालन, कार्य करने और संदेश संप्रेषण में इंटरनेट की आवश्यकता रहती है। अतः सूचनाओं का निर्माण, संग्रहण और प्रसारण किया जाना इलेक्ट्रानिक मीडिया की आवश्यकता के तहत ही संभव है। इसी के तहत डिजीटल कैमरे की मदद से विद्युत छवियां तैयार और प्रसारित की जाती हैं। अतः इलेक्ट्रानिक मीडिया संचार का ऐसा साधन है जिसके मध्य एक विद्युत ताकत उपस्थित रहती है और यहां इंटरनेट के माध्यम से छवियों का निर्माण, संग्रह और संप्रेषण किया जाता है। इलेक्ट्रानिक मीडिया का वर्तमान रूप वैश्वीकरण की बाजारवादी शक्तियों का उत्पाद है। इन शक्तियों ने इंटरनेट की प्रौद्योगिकी के माध्यम से संसार भर में सूचनाओं का तानाबाना बुना है और उनको अपने हितार्थ पूर्ण करने के लिए निरंतर सक्रिय रहती हैं।

इलेक्ट्रानिक मीडिया के सामाजिक सरोकार

इलेक्ट्रानिक मीडिया का क्षेत्र निरंतर विस्तार पा रहा है, जिसका एक बड़ा कारण भूमण्डलीकरण की नीतियां और व्यापार की सीमाओं का हट जाना है। ऐसी स्थिति में जो व्यापार विद्युत तरंगों के माध्यम से होता है वह तो और भी सरल और सुगम हो गया, क्योंकि वहां माल को किन्हीं साधनों पर लादकर नहीं, अपितु तरंगों के माध्यम से संप्रेषित किया जाता है और पलक झपकते ही यह हमारे सामने उपस्थित हो जाता है। इस संचार प्रवाह में बुहत कुछ शिष्ट होता है तो कुछ-कुछ अशिष्ट यानी सभी के लिए समान रूप से लाभदायी नहीं होता। यद्यपि इस पर रोक लागू करने की मांग उठती रही है, मगर निर्णय लेने से पूर्व किसी भी देश के लोकतांत्रिक ढांचे और जन-मानसिकता का गहन अध्ययन आवश्यक है।

आज मीडिया के सामाजिक सरोकारों की बात की जा रही है। सरोकार हमें एक खास तरह की जिम्मेदारी, उत्तरदायित्व का बोध कराता है और जब इसके साथ सामाजिक शब्द जोड़ दिया जाए तो यह विस्तृत अर्थ ग्रहण कर लेता है। यानी सम्पूर्ण समाज के प्रति मीडिया का जो उत्तरादायित्व है, इनका निर्वहन करना मीडिया का सरोकार हो जाता है। अतः पारिभाषिक रूप से कह सकते हैं कि मीडिया की सामाजिक,

सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक संवैधानिक जीवन-मूल्यों और संघर्षों को जनता तक पंहुचाने में जो जिम्मेदारी बनती है उनका निर्वहन करना ही मीडिया का सामाजिक सरोकार है। इलेक्ट्रानिक मीडिया की समाज के प्रति जवाबदेही मात्र कानूनी ही नहीं, नैतिक भी है। कोई भी अधिनियम हमें जब अधिकार देता है, वहीं साथ ही वह उत्तरदायित्व भी निर्धारित करता है। जैसे संविधान के अनुच्छेद 14 से 32 तक नागरिकों को मूलभूत अधिकार दिए गए हैं। संविधान के अनुच्छेद 51क में नागरिकों के मूलभूत कर्तव्य भी निर्धारित किए गए हैं। ठीक इसी तहर निजीकरण के कारण तेजी से विकसित हुए इलेक्ट्रानिक मीडिया को जहां अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्राप्त है तो उसे अभिव्यक्ति की स्वंतत्रता का प्रयोग करते समय अपने कर्तव्यों का भी अनुपालन करना चाहिए। जब वह इन कर्तव्यों का पालन करता है तो वह मीडिया के सामाजिक सरोकारों को अपनाता रहता है।

एन.डी.टी.वी. के एक्जीक्यूटिव एडिटर पंकज पचौरी के अनुसार 1950 में मीडिया कुछ छोटे पत्र-पत्रिकओं और पुराने घरानों 'टाइम्स आफ इंडिया', 'हिन्दुस्तान' तथा 'इंडियन एक्सप्रेस' तक सीमित था। अब भारत में मीडिया एक पूरा उद्योग बन गया है। कुल 37 कम्पनियां शेयर बाजार में सूचीबद्ध हैं और इनकी कुल कीमत 70 हजार करोड़ से ज्यादा है। दुनिया की सभी बड़ी कम्पनियां भारतीय मीडिया में पैसा निवेश कर रही हैं चाहे टी.वी. में, चाहे प्रिंट में। यह देश के लिए अच्छा है। इससे मीडिया जगत में प्रतिद्वंद्विता और प्रोफेशनलिज्म बढ़ा है।"

इलेक्ट्रानिक मीडिया और बाज़ार

'इलेक्ट्रानिक मीडिया में विकास तथा सूचना प्रौद्योगिकी में बदलावों ने एक बड़े बाजार को जन्म दिया है क्योंकि मीडिया पहुंच ने उपभोक्ताओं को अधिक संवेदनशील, जागरूक तथा सचेत बना दिया है। यहां तक टेलीविजन पर विभिन्न कार्यक्रमों ने मानवीय सोच को बदल दिया है तथा इसने सांस्कृतिक तथा सामाजिक मूल्यों को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। मीडिया पहुँच में बच्चे भी पीछे नहीं हैं। वे घरों में टेलीफोन, इंटरनेट, दूरदर्शन, पी.सी.ओ. आदि के सम्पर्क में निरंतर बने रहते है। इन साधनों के सम्पर्क में रहने से ज्ञान की परिधि बढ़ती है। सम्पर्क संजाल मजबूत होता हैं सामाजिक संबंध अधिक घनिष्ठ तथा मैत्रीपूर्ण होते हैं तथापि इसके नकारात्मक प्रभाव भी होते हैं।"

इलेक्ट्रानिक मीडिया का बड़ा वर्ग कारपोरेट सेक्टर से संचालित हैं, उसके दिशा-निर्देशों और निवेश पर निर्भर रहता है। ऐसी दशा में उसे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उसके इशारों का पालन और संचालन करना पड़ता है। इलेक्ट्रानिक मीडिया द्वारा समाज के निम्न और निम्न-मध्यवर्ग के जीवन और समस्याओं को गहराई से उद्घाटित और प्रस्तुत करने की अपेक्षा मध्यवर्गीय और उच्चवर्गीय चरित्र पर अधिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं। मीडिया में भारत की छवि अच्छी बननी चाहिए इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती, मगर ऐसी छवि का निर्माण करते वक्त भारत के 6 लाख गांवों और 650 जिलों की सच्चाई भी मीडिया को ध्यान में रखनी चाहिए। भारत के प्रत्येक नागरिक को अपने देश पर गर्व है, मगर साथ ही इस देश में लिंगीय, जातीय, धार्मिक गर्व के नाम पर होने वाली बर्बरताओं का भी उद्घाटन जरूरी है।

इलेक्ट्रानिक मीडिया और सामाजिक एकता

भारतीय समाज में विविधताएं तो हैं, मगर यहां गंभीर तरह के भेदभाव व्याप्त हैं। हालांकि

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कानूनी स्तर पर सभी तरह के भेदभावों को समाप्त घोषित किया जा चुका है, मगर व्यक्ति अपनी परम्परा और संस्कृति के नाम पर इनसे अभी भी जुड़ा हुआ है। यही कारण है कि हमारे यहां लिंग, धर्म, जाति, भाषा इत्यादि स्तरों पर उत्पीड़न कायम है। इलेक्ट्रानिक मीडिया को समाज के नवनिर्माण और भेदभावमुक्त मानवीय समाज की रचना हेतु सक्रिय रूप से इन मुद्दों को उठाना चाहिए। यद्यपि मीडिया में इस दृष्टि से अनेक प्रयास हुए है फिर भी इस दिशा में अधिक ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है।

भारतीय जनमानस में बड़े स्तर पर सामाजिक, आर्थिक भेदभाव और असहिष्णुता कायम है। मीडिया को इसकी वास्तवकिता से दूर जाने की अपेक्षा इसके कारण और परिणामों को रेखांकित करना चाहिए, ताकि असहिष्णुता समाप्त हो और गैर बराबरी के स्थान पर समता, बंधुता और प्रेम का जन्म हो। यह भी देखने में आया है कि भारत में साम्प्रदायिक हिंसा में जितने लोग मारे जाते हैं उससे कहीं अधिक लोग जातिवादी हिंसा और हिंसक व्यवहारों का शिकार होते हैं। समाज में गंभीर तरह के आर्थिक भेदभाव भी हैं। 20 रूपये रोजाना पर जीवनयापन करने वाले लोग यहां बहुमत में हैं। अभी गरीबी से नीचे का जीवनयापन करने का पैमाना निर्धारित करते वक्त केन्द्र सरकार ने 27 रूपये ग्रामीण और 32 रूपये नगरीय क्षेत्रों में प्रतिदिन कमाने वाले व्यक्ति को बी.पी.एल. से बाहर रखा था जो मीडिया में चली एक लम्बी बहस के बाद योजना आयोग को वापस लेना पड़ा था। मीडिया का यह एक सकारात्मक कदम था जिससे देश के सामने मौजूद एक बड़े प्रश्न से जनता को अवगत करवाया। यह एक मानसिकता है जिसकी जड़ें कहीं न कहीं हमारे आचरण और संस्कारों में है, इसलिए ऐसी मानसिकता को उजागर करना और उसके विरुद्ध जनमत बनाना इलेक्ट्रानिक मीडिया का फर्ज यानी सरोकार है।

इलेक्ट्रानिक मीडिया और अंधविशवास

इलेक्ट्रानिक मीडिया विभिन्न तरह के बाबाओं और तथा कथित संतों का आश्रयदाता बना हुआ है या इन्होंने अपने चैनल बना लिए हैं। इनके माध्यम से सांस्कृतिक मूल्यों के नाम पर वहीं पुरातनपंथी अन्यायकारी धारणाएं प्रचारित-प्रसारित की जाती है। आखिर इनका मकसद क्या हैं ? समाज में पैदा होने वाली वैज्ञानिक चेतना और सम्यक विकास को अवरूद्ध करने और लोगों को परम्रागत लीक पर 'कोल्हू के बैल की तरह दौड़ाए रखने का अभियान जारी है। अनुचित को त्यागने और नए को ग्रहण करने की दिशा में यानी सांस्कृतिक चेतना पैदा करने की आवश्यकता है। अतः इलेक्ट्रानिक मीडिया को सांस्कृतिक धरोहर का आकलन समीक्षा, पुनर्समीक्षा संवैधानिक मूल्यों के आधार पर करते हुए ही उसे प्रसारित किया जाए तो बेहतर होगा।

भ्रष्टाचार के विरूद्ध जन लोकपाल अधिनियम बनाने के लिए अगस्त 2011 में दिल्ली के रामलीला मैदान पर अन्ना की टीम द्वारा आमरण अनशन किया गया था। इस अनशन को 12 दिन तक मीडिया ने प्रसारित करके यह साबित करने का प्रयास किया कि शायद भारत मे जन लोकपाल कानून बनने के बाद सभी समस्याओं का समाधान हो जाएगा। हमारे यहां कानून हैं, जरूरत है इन्हें सख्ती से लागू करने की। मीडिया ने ऐसा माहौल बनाया जिससे लगा कि देश की सबसे बड़ी समस्या यही है। मीडिया किसी खास उद्देश्य से ऐसा करता है। इसी रामलीला ग्राउण्ड में न्याय से वंचित समूहों द्वारा समय-समय पर अनेक आयोजन होते रहते

हैं, लेकिन मीडिया उनकी तरफ ध्यान नहीं देता या देता है तो एक कतरन देकर अपना कर्तव्य पूरा कर लेता है। कहने का अर्थ है कि इलेक्ट्रानिक मीडिया में कार्यरत लोग एक विशेष दृष्टिकोण, विचारधारा के आधार पर अपने कार्यक्रम बनाते हैं, क्योंकि मीडिया भी भ्रष्टाचार में लिप्त है। इसके कारपोरेट से संबंधों को देखा जाए तो वह स्वंयमेव स्पष्ट हो जाएगा। इलेक्ट्रानिक मीडिया को इस दिशा में आत्ममंथन करना होगा और अपने निहित स्वार्थों की अपेक्षा सामाजिक सरोकारों की तरफ अग्रसर होना होगा। हमारे यहां लोकतांत्रिक व्यवस्था के अनुपालन में अनेक खामियां हैं। उनकी तरफ इलेक्ट्रानिक मीडिया को जीवंतता से आगे आना होगा। महानगरीय, नगरीय परिवेश के समाचारों के आधार पर ही सारा दिन खबरिया चैनल चलते रहते हैं। ग्रामीण गरीबी, बेकारी, अशिक्षा को ध्यान में रखकर बनने वाले कार्यक्रमों की प्रस्तुति में जनता के न्यायसंगत मुद्दों को बल मिलना चाहिए। देशभर में न्याय से वंचित लोगों को न्याय दिलवाने के लिए इलेक्ट्रानिक मीडिया के द्वारा प्रयास होने चाहिए। किस क्षेत्र, राज्य और जिले में सामाजिक अन्याय, उत्पीड़न और हिंसा हो रही है। उसके कारणों को समझना और उस पर विस्तृत रिपोर्ट पेश करते हुए इसे जनोन्मुखी और प्रभावशाली बनाया जाना चाहिए। इलेक्ट्रानिक मीडिया को आम आदमी की आजादी के प्रश्नों, उसके कार्य करने और सोचने के सवालों, बढ़ती उपभोक्ता संस्कृति और बाजारवाद से पैदा हो रही नई पीढ़ी की समस्याओं को नए सिरे से देखना-परखना होगा। भारतीय समाज में वंचित वर्गों को न्याय के लिए गतिशील करने और अन्याय करने वाली सामाजिक-सांस्कृतिक राजनीतिक सत्ताओं को मानवीय बनाने की पहल करना भी इलेक्ट्रानिक मीडिया का एक बड़ा सरोकार है। अतः उसे बदलते और शिक्षित होते समाज की समस्याओं और जागरूक करने के तौर तरीकों पर गंभीरता से विचार करना होगा।

इलेक्ट्रानिक मीडिया और भाषा

सामाजिक-राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक विकास और जनकल्याण इत्यादि के वृहद प्रश्नों को इलेक्ट्रानिक मीडिया के माध्यम से जनता तक पहुंचाना आवश्यक है। राजभाषा की स्थिति और जन-मानसिकता का भी अध्ययन और रिपोर्टिंग आवश्यक है। भारत की मात्र 5 प्रतिशत जनसंख्या अंग्रेजी समझती है। ऐसी स्थिति में या तो हिन्दी है या अन्य राजभाषाएं है जिन्हें संविधान की 8वीं अनुसूची मे दर्ज किया गया है। यानी महज 5 प्रतिशत के बल पर 95 प्रतिशत देशी भाषाओं के अधिकारों और उनके सोचने समझने और लेखन का महत्व न दिया जाना स्पष्ट करता है कि इलेक्ट्रानिक मीडिया की मानसिकता कहीं दूर से बन रही है। साहित्य, समाज और मीडिया के बुनियादी सवालों से मुंह फेर लेने से मामला समाप्त नहीं हो जाता, बल्कि और बढ़ता है। ऐसी दशा में बहुराष्ट्रीय कंपनियों के आर्थिक दबावों, प्रभावों को अपने राष्ट्रीय हितों पर हावी नहीं होने देना चाहिए। हमारे आर्थिक हित अपनी जनता के हितों से जुड़े हुए हैं। इसलिए मीडिया का सरोकार हो जाता है कि साहित्य द्वारा जिन नए मुद्दों को उठाया जाता है उन्हें अपने कार्यक्रमों में अपनाएं और साहित्यकार और समाज के बीच संवाद स्थापित करे और साहित्य के विचारों को जनता तक सुगमता से प्रसारित करे।

इलेक्ट्रानिक मीडिया में भ्रष्टाचार के मामले सामने आने लगे हैं। इसका सबसे बड़ा उदाहरण 'पेड न्यूज' का है। इन मामलों से मीडिया की

विश्वसनीयता पर संदेह व्यक्त किया जाने लगा है। अतः इलेक्ट्रानिक मीडिया को जीवन-जगत की सभी यथार्थ घटनाओं को वास्तव में प्रसारित करना चाहिए और 'पेड न्यूज' जैसे मामलों से बचना चाहिए।

आज सूचना विस्फोट के कारण टेलीविजन सूचना का शक्तिशाली माध्यम बन गया है जिससे समाज में बाहरी रूप से अधिक खुलापन आ रहा है। इसने हमारी राजनीतिक, सामाजिक संरचनाओं और बाजार को भी प्रभावित किया है। आज कोई भी सरकार लोगों को अज्ञानता या भ्रम में नहीं रख सकती। "सूचना विस्फोट के कारण सूचना के प्रवाह पर सभी तरह के अवरोध लगभग असंभव हो गए हैं। सूचनाओं का यह प्रवाह समाज में परिवर्तन के लिए उत्तरदायी है। सूचना तकनीक की क्रांति से कृषि और औद्योगिक क्रांति पर गहरा प्रभाव पड़ा है। इन दोनों क्रांतियों ने व्यक्ति के जीवन और आचरण को प्रभावित किया है..... बाजार की शक्तियां अपने लक्ष्य अच्छी तरह जानती हैं। उन्होंने सम्पूर्ण मीडिया को एक बड़े व्यवसाय में रूपांतरित कर दिया है। समाचार-पत्रों और इलेक्ट्रानिक मीडिया दोनों ही बाजार की ताकतों के हाथों के औजार बन गए हैं जो उन्हें अधिक से अधिक धन और लाभ कमाने के लिए प्रयुक्त कर रहे हैं।..... यहां पर इलेक्ट्रांनिक मीडिया को आर्थिक औद्योगिक विकास ओर सामाजिक विकास के मध्य सामंजस्य और संतुलन बनाने के लिए प्रयास करने चाहिए।..... हमारे देश में जहां बड़ी आबादी गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करती है यहां उपभोक्तावाद और बाजार की ताकतों का प्रभुत्व गैर बराबरी बढ़ाएगा। विज्ञापन के माध्यम से लाभ की दौड़ में हमेशा सामाजिक मूल्यों से समझौता करने की प्रवृत्ति सामने आती है। सेक्स अपराध और हिंसा के कार्यक्रम को दोहराया जाना आम होने से समाज में तनाव बढ़ेगा। अश्लीलता का यह रूप सामाजिक वातावरण को विषाक्त बनाएगा।'

मीडिया की एक चुनौती यह भी है कि वह कैसे जुझारू, सजग उत्तरदायित्वपूर्ण तथा लोकतांत्रिक स्वरूप को गढ़कर 'चतुर्थ स्तंभ' के अपने आदर्श की रक्षा करें। इसके लिए तमाम व्यावसायिकता के नारों के बीच भारतीय मीडिया को यह समझना होगा कि वह लोक का शक्तिशाली स्तंभ है और राष्ट्रीय संस्कारों तथा लोकतांत्रिक मूल्यों का संवाहक भी। वह दिशादर्शन के गहरे दायित्वबोध से भी जुड़ा हुआ है। भारतीय मीडिया-चाहे वह इलेक्ट्रानिक मीडिया हो अथवा प्रिंट मीडिया दोनों का ही सैद्धांतिक स्वरूप राष्ट्रीय समता, अखंडता और संप्रभुता बनाए रखने के उद्देश्य के साथ-साथ देश की जनता में सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से एक अनुकूल और प्रेरक सोच पैदा करने के उद्देश्य से गढ़ा गया है। शिक्षा और साक्षरता के माध्यम से समाज के विकास को गति देना भी उनका लक्ष्य है। उसके उद्देश्यों में जागृति पैदा करना, सूचना देना तथा व्यापक रूप से जनता के जीवन स्तर को उठाना भी शामिल है। भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में मीडिया के सिद्धांन्त और व्यवहार के बीच की खाई बढ़ गई है। उसे इन्हीं चुनौतियों से गुजरकर वह राह पकड़नी होगी, जिस पर चलकर वह देश के व्यापक फलक पर व्याप्त भ्रष्टता और विसंगति को चुनौती दे सके।"

ऐसा नहीं है कि पश्चिम में जो कुछ हो रहा है वह सब खराब ही हो। वहां बहुत कुछ ऐसा भी हो रहा है कि अगर उसकी नकल की जाए तो वह हमारे हित की होगी। पश्चिम में काम को

काम की तरह किया जाता है, खानापूर्ति नहीं होती। अगर रिसर्च की बात है तो रिसर्च ही होती है, मात्र कागज नहीं भरे जाते। ये बातें वहां से सीखी जानी चाहिए। जितनी मेहनत वे किसी कार्य को करने में लगाते हैं वह सीखना चाहिए। उसे अपनाना चाहिए। अगर कुछ अच्छा नजर नहीं आता। तो रिमोट से चैनल को बदला जा सकता है। साम्राज्यवाद के नए-नए प्रभावों की धूल झाड़कर अपनी पहचान बनाए रखना है आज भारतीय मीडिया भी चुनौती है। इन स्थितियों में जरूरत इन बात की है कि नियोजित ढंग से मीडिया के लोक कल्याणकारी रूप को उभारा जाए। हाईटेक संचार माध्यमों के साम्राज्यकारी - प्रभुत्ववादी आधुनिकता के जाल को काटने के लिए मीडिया को सही रास्ते पर आज नहीं कल, आना ही होगा।"

सूचना प्रौद्योगिकी के कारण भारत की बड़ी आबादी जो शिक्षित, अर्धशिक्षित है, के मध्य के विचार पैदा होने लगे हैं जो सूचना प्राद्योगिकी के अभाव में कभी संभव ही नहीं थे। हमारे यहाँ जैसे-जैसे मध्यवर्ग का उभार हो रहा है, वैसे-वैसे उपभोक्तावादी संस्कृति का जन्म हो रहा हैं इनकी आवश्यकताएँ घन की वजह से पैदा हुई और यहाँ धन कमाओं - धन खर्चों, की मानसिकता उभरी है। इस वर्ग की संतानें देश की शिक्षा व्यवस्था से लाभान्वित होकर जल्द से जल्द अमेरिका या यूरोप में चले जाना चाहती हैं और धन कमाकर अपना विशिष्ट जीवन जीना चाहती हैं, से वर्ग के लिए देश और देश की समस्याओं का कोई मूल्य नहीं है। इसी कालखण्ड में इलेक्ट्रा ॅनिक मीडिया के सामने चुनौती यह है कि वह देश की वास्तविक समस्याओं से युवा वर्ग, प्रबुद्ध वर्ग के साथ-साथ लोकतंत्र के स्तम्भों को किस तरह से अवगत करवाए।

इलेक्ट्रानिक मीडिया ने भारतीय जनजीवन को निकटता से प्रभावित किया है और इसका प्रभाव समाज के विभिन्न कार्यकलापों पर देखा जा सकता है। चाहे शिक्षा के प्रश्न हो, स्वास्थ्य या रोजगार के या आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, विचारधाराओं और उनकी श्रेष्ठता साबित करने के संघर्षों को व्यक्ति ने इन सभी के मध्य अपनी परम्परागत सोच समझ में कुछ संशोधन किए हैं। ऐसे संशोधन और वैचारिक बदलाव एक खास दृष्टि से हुए हैं जिनके मध्य कहीं न कहीं मीडिया की सार्थक भूमिका नजर आती है। हालांकि देश और समाज के सामने चुनौतियां बहुत हैं, जिनको सच्चाई मानकर जीवन तो जीना ही है साथ ही बेहतर जीवन जीने के लिए पीढ़ियों को तैयार करना है।

निष्कर्ष

इलेक्ट्रानिक माध्यमों द्वारा सामाजिक न्याय, अधिकार, प्रतिनिधित्व और संघर्ष के मामलों को प्रसारित करने से बचा जाता है, क्योंकि मीडिया समूहों में सामाजिक प्रभुत्व प्राप्त वर्ग का दबदबा या एकाधिकार है। ऐसी स्थिति में यह वर्ग अपनी विशिष्ट विचारधारा को महत्व देता है और न्याय के लिए संघर्ष करने वाले समूहों, व्यक्तियों, को बड़ी चालाकी से नजरअंदाज कर दिया जाता है। दलितों, महिलाओं की स्थिति और इनके मानवाधिकारों के प्रश्नों को उठाने से परहेज किया जाता है। मीडिया को अपनी मानसिकता बदलने और उसे सम्यक बनाने की आवश्यकता है। इलेक्ट्रानिक मीडिया पर समाज के बहुत बड़े सत्य को सामने लाने की जिम्मेदारी है। यदि मीडिया लोकतांत्रिक समाज निर्माण की भावनाओं को समझ कर उसको बिना भेदभाव के प्रसारित करेगी तो निश्चित है कि जनता भी उसके साथ खड़ी नजर आएगी। अतः जनता और मीडिया में

आपसी संवाद आवश्यक है। इलेक्ट्रानिक मीडिया की क्रांति ने विश्व की सोच और सोचने के तौर तरीकों को बदला हैं इसी वजह से आज व्यक्ति वैश्विक ज्ञान और स्थितियों को पहले की अपेक्षा अधिक जानने लगा है। अतः इलेक्ट्रानिक मीडिया के संयमित और न्यायपरक विकास की आवश्यकता निरंतर बनी रहेगी और जो विकास धनार्जन के लिए ही जुटे हुए हैं वे अधिक समय तक समाज, जनता और देश के साथ जुड़कर नहीं रह पायेंगे। इसलिए मीडिया को 'पीपल फ्रेंडली' बनकर जनजागरण करने और सामाजिक सरोकरों के प्रति समर्पित होकर कार्य करने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. www.k~ electronicmedia.co.zadt.k~ 12.2.12

2. मीडिया आज भी आम सरोकारों की बात करता है, समाचार 4 मीडिया.काम, दिनांक 26 जनवरी, 2011

3. इलेक्ट्रानिक मीडिया और बाल विकास, पाण्डेय डॉ. योगेश कुमार, सत्य पब्लिशिंग हाउस दिल्ली 2005, पृष्ठ 129

4. मीडिया एवं सोशल रेसपांसाविलिटी, शर्मा, राधेश्याम, संपादक वीरबाला अग्रवाल, मीडिया एण्ड सोसाइटी, कंसैप्ट पब्लिशिंग कम्पनी नई दिल्ली, 2002, पृष्ठ 5,7

5. भूमंडलीकरण और मीडिया, शर्मा कुमुद ग्रंथ अकादमी नई दिल्ली, 2003, पृष्ठ 174

6. निजी चैनल का सामाजिक सांस्कृतिक प्रभाव, रैना बी.एन, संपादक प्रेमचंद पातंजलि मीडिया के पचास वर्ष, पृष्ठ 109

7. भूमण्डलीकरण और मीडिया, शर्मा कुमुद पृष्ठ 175